B.A. Part III प्रधान हिन्दी

छायावादी काव्य की प्रवृत्तियाँ :-

छायावाद का विकास द्विवेदीयुगीन कविता के उपरान्त हुआ। छायावादी काव्य की समय सीमा 1918 ई० से 1936 ई० तक मानी जा सकती है। इस काल के प्रमुख कवि महादेवी वर्मा, सूर्यकान्त निपाठी निराला, सुमित्रानंदन पंत और जयशंकर प्रसाद हैं। छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं —

1. अभिव्यंजना - छायावादी कवियों ने काव्य की विषय-वस्तु अपने व्यक्तिगत जीवन से ही खोजने का प्रयास किया है। छायावादी कविता में वैयक्तिक सुख-दुःख की खुलकर अभिव्यक्ति हुई है। प्रसाद कृत 'आँसू' और पंत कृत 'उच्छ्वास' नामक कविता इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। निराला की कई कविताओं में उनके व्यक्तिगत जीवन का सत्य व्यक्त हुआ है। 'राम की शक्ति पूजा' में राम की हताशा, निराशा में कवि के अपने जीवन की निराशा की अभिव्यक्ति हुई है। उन्हें जीवन भर लोगों के जिस विरोध को झेलना पड़ा वह गूँज बड़ी मार्मिक है —

"धिक जीवन जो पाता ही आया विरोध।
धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध॥

2. सौन्दर्य चित्रण - छायावादी कवि मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि हैं। प्रसाद ने कामायनी में श्रद्धा के सौंदर्य का चित्रण इन पंक्तियों में किया है —

नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ बन बीच गुलाबी रंग॥

सौंदर्य वर्णन में स्थूलता एवं मांसलता के स्थान पर सूक्ष्मता एवं वायवीयता है।

Scanned with CamScanner

(3) शृंगार निरूपण – छायावादी काव्य में शृंगार के दोनों पक्षों संयोग एवं वियोग का भरपूर प्रयोग हुआ है पंत की रचना में प्रिया के लावण्य से अद्भुत आकर्षण का उल्लेख मिलता है —

"तुममें जो लावण्य मधुरिमा जो असीम सम्मोहन
तुम पर प्राण निछावर करने पागल हो उठा मन।"

छायावादी काव्य में विरह वेदना का निरूपण भी प्रचुर मात्रा में हुआ है। आँसू में प्रसाद जी ने विरह का मार्मिक वर्णन किया है —

"झंझा झकझोर गर्जन था, बिजली थी नीरद माला।
पाकर इस शून्य हृदय को सबने आ घेरा डाला॥"

(4) नारी के उदात्त रूप का वर्णन — छायावादी कवियों ने नारी को उदात्त रूप प्रदान करते हुए उसे पुरुष की प्रेरक शक्ति के रूप में स्वीकार किया। नारी दया क्षमा, करुणा, प्रेम आदि गुणों से सम्पन्न है। और नारी श्रद्धा की पात्र है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पग तल में।
पियूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।

(5) रहस्य भावना – छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति रहस्य भावना है। पंत की मौन निमंत्रण कविता में रहस्यवाद की अभिव्यक्ति अत्यन्त मनोरम ढंग से हुई है जहाँ कवि को प्रकृति के उपादानों में उस अज्ञात सत्ता के 'मौन निमंत्रण' का आभास होता है —

"न जाने कौन अए द्युतिमान
जान मुझको अबोध अजान
सुझाते हो तुम पथ अनजान
फूंक देते छिद्रों में गान।"

Scanned with CamScanner

(6) प्रकृति चित्रण – छायावादी कवियों ने प्रकृति की मनोरम छटा अंकित की है पंत प्रकृति सौंदर्य को नारी सौन्दर्य से श्रेष्ठ मानते हुए कहते हैं –

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन?

(7) दुःख और वेदना की अभिव्यक्ति – छायावादी काव्य में दुःख और वेदना की अभिव्यक्ति प्रमुखता से हुई है। महादेवी वर्मा अपने जीवन की तुलना नीर भरी बदली से करती हैं। "मैं नीर भरी दुःख की बदली" में इनकी वेदना चरमसीमा को छू गयी है।

(8) रागात्मक प्रेम की अभिव्यक्ति – छायावाद में रागात्मकता की भावना भी विद्यमान थी। प्रसाद जी के 'अरुण यह मधुमय देश हमारा" तथा माखन लाल चतुर्वेदी के गीतों में "पुष्प की अभिलाषा" इसका अच्छा उदाहरण है।

(9) शैलीगत प्रवृत्तियाँ – छायावादी काव्य विषय वस्तु एवं शिल्प विधान दोनों ही दृष्टियों से नवीन है। लाक्षणिक भाषा, प्रतीकात्मक शैली, नवीन अलंकार विधान, मुक्तक गीति शैली, उपचार वक्रता आदि के कारण इस काव्यधारा का शिल्प बेजोड़ बन गया है। इन कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को सुकुमार, ललित एवं मधुर बनाकर उसे काव्य भाषा के लिए उपयुक्त बना दिया।

Scanned with CamScanner